॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

मई, 2016 वर्ष 19, अंक 05 | दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110 | वार्षिक शुल्क 100 रुपये

विक्रमी सम्वत् 2073 | दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756 | ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com

एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये | कुल पृष्ठ 20

आर्य समाज का एक और सूर्य अस्त हुआ
महात्मा सत्यानन्द जी मुंजाल नहीं रहे

जवान से निकली बात, कमान से निकला तीर बिता हुआ समय जिस प्रकार वापिस नहीं आता ठीक उसी प्रकार उदय होता सूर्य एक ना एक दिन अस्त होना ही है। यह सुनिश्चित है। समय भी निर्धारित है। यह अलग बात है कि नया संवेरा होगा और सूर्य पुनः उदित होगा परन्तु कुछ समय के लिए तो चारो ओर अन्धेरा तो छा गया। गहन रात्रि तो उपस्थित हो गई।

पूज्य महात्मा सत्यानन्द जी का जीवन रूपी सूर्य अस्त हो गया। दिनांक 14.04.2016 को प्रातः आप हम सब को छोड़कर चले गए। हमारी आंखों से हमेशा-हमेशा के लिए ओझल हो गए। हमारे हृदयों में उनकी छवि हमेशा रहेगी। अब यह आँखे उन्हें कभी देख नहीं पायेगी। हां उनकी याद में सजल तो रहेगी। आंखे अंधेरे में उन्हें, खोजती रहेगी लेकिन कभी सफल नहीं हो पायेगी। हमारी आंखों की यह प्यास हमेशा महात्मा सत्यानन्द जी को देखने की कभी पूर्ण नहीं होगी। जीवन में आना जाना एक सत्य है गीता में लिखा है।

'जातस्य हि ध्रुवोमृत्युः ध्रुवं जन्म मृतस्य च'

अर्थात् जो संसार में आया है उसे तो जाना ही है। चाहे राजा हो या रंक हो, गृहस्थी हो या साधु हो, बालक हो या बूढ़ा हो, स्त्री हो या पुरुष हो। इस नियम से सब बंधे हुए हैं। इसीलिए समय आ गया था। महात्मा जी भी चले गए।

महात्मा सत्यानन्द जी मुंजाल
24.05.1917-14.04.2016

अब उनके जाने के बाद उनके प्रिय जनो का उनसे प्रीति रखने वालों का कर्त्तव्य है कि उनके जो प्रिय कार्यो उनके सपनों में थे जिन्हें वह हिमालय की ऊँचाइयों तक देखना चाहते थे। अधिक से अधिक आर्य समाजो को स्थापित करना एवं बन्द पड़ी आर्य समाजों को पुर्नजीवित करना उनका प्रिय कार्य था। अपने जीवन काल में आर्य समाज पुलबंगश, नई दिल्ली से लेकर पंजाब, गढ़वाल और विशेष कर लुधियाना के निकटर्वतीय स्थानों पर असंख्य आर्य समाजो की स्थापना आपके द्वारा हुई।

युवको को आर्य समाज की विचारधारा की ओर आकर्षित करना भी उनके जीवन काल में एक प्रिय कार्य रहा। समाज में आज ना जाने कितने ही युवक उनसे प्रेरणा पाकर आर्य समाज में सक्रिय हुये और वर्तमान में आर्य समाज को अपनी सेवाये दे रहे है। जिस प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सर्वप्रथम अपने बेटों को प्रोत्साहित किया। ठीक उसी प्रकार आपने अपने परिवार से बेटो को भी प्रोत्साहित किया और आज भाई योगेश जी एवं सुधीर जी बड़ी निष्ठा से टंकारा जन्मभूमि के कार्य को आगे बड़ा रहे है। यही नहीं महात्मा जी का बृहद सारा मुंजाल परिवार आज टंकारा से जुड़ा हुआ है और विशेष कर महात्मा जी के छोटे भाई स्व. बृजमोहन मुंजाल जी का सहयोग आज वहां के भवनो एवं द्वार के रूप में देख जा सकता है। महात्मा जी की लोकप्रियता उस दिन जग जाहिर हो गई। जब उनकी शवयात्रा में भारत भर से प्रतिनिधि उपस्थित थे, लुधियाना शहर ऐसा प्रतीत होता था जैसे सारा शहर सड़को पर उत्तर आया हो सभी आंखे नम किये उनकी शव यात्रा में चल रहे थे। उनके पार्थिव शरीर को सर्वप्रथम आर्य समाज ले जाया गया और उसके उपरान्त उन द्वारा स्थापित स्कूल जहां वह मृत्यु प्रर्यन्त सहयोगी अधिकारी रहे।

पंजाब की सभी समाचार पत्रों ने **'साईकल उद्योग का हीरो चला गया'** के शीर्षक से दु:खद समाचार को स्थान दिया।

समस्त टंकारा परिवार की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

शोक संदेश

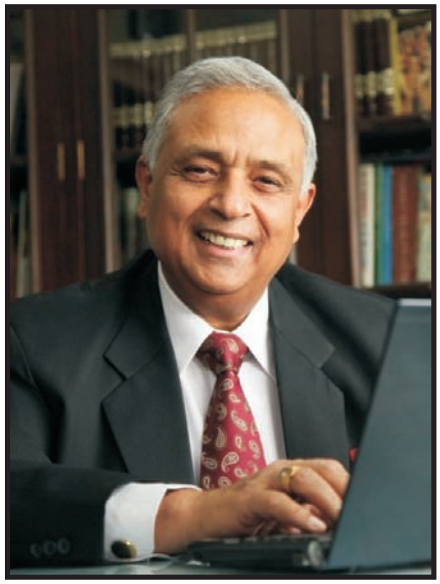

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल नहीं रहे, यह जानकर हृदय को एक गहरा आघात पहुंचा है। मुंजाल जी के स्वास्थ्य को लेकर जानकारी तो मिली, लेकिन अस्वस्थता के चलते मैं उनके दर्शन नहीं कर सका, इसका खेद मुझे उम्रभर रहेगा। श्रद्धेय मुंजालजी हमारे आदर्श पुरुषों में से एक रहे जिन्होंने जीवन की भौतिक उपलब्धियों तथा अध्यात्म और परोपकार के बीच एक अपूर्व संतुलन बनाए रखा। विनम्रता, सादगी और जीवन-मूल्यों के मजबूत स्तंभों पर आधारित उनका चरित्र जीवन के हर क्षेत्र से जुड़े व्यक्ति के लिए एक दीपस्तंभ बनकर प्रज्ज्वलित रहेगा। श्रद्धेय मुंजाल जी ने ९८ वर्ष की अपनी जीवन यात्रा में उद्यमशीलता, मानवीय संबंधों, उदारता, ईश्वर विश्वास और देश-भक्ति के विश्व व्यापी कीर्तिमान स्थापित किए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति मुंजालजी के मन में अगाध श्रद्धा थी, आर्य समाज की मान्यताओं और इसके कार्यक्रमों में अटूट विश्वास था। मुझे महात्मा आनन्दस्वामी के साथ उनके संबंधों का स्मरण आता है। श्रद्धेय मुंजाल जी उनके साथ आर्य समाज और आध्यात्मिकता को लेकर गंभीर चर्चाएँ किया करते थे। आर्य समाज, वसंत विहार, में उनका अक्सर आना-जाना रहता था और इस समाज का भौतिक विकास तथा उसके समाजसेवी कार्यक्रमों को दिशा देने में उनकी दूरदृष्टि और दानशीलता सदैव हमारा मार्ग प्रशस्त करती रहेगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि मुंजाल परिवार श्री सत्यानन्द मुंजाल जी के आदर्शों, उद्देश्यों और सरोकारों को निभाते हुए उनकी छवि को विश्व-व्यापी बनाए रखने के साथ-साथ आर्य समाज के प्रति उसी प्रकार का सौहार्द और विश्वास बनाए रखेगा।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा और डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति की ओर से शोकग्रस्त परिवार के प्रति अपनी हार्दिक संवेदनाएँ और सहानुभूति व्यक्त करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह इस परिवार को इस अपूरणीय क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

पूनम सूरी
प्रधान
डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा
ट्रस्टी, महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा

Condolence by Grand Daughter **Nidhi Kapoor**

So Pure as Saint is Our Dada Ji

Another star in the sky .
My Saint has gone back to our real home away from this illusion world .
Divine has an awesome smile as He saw my Dadu there .
Prabhu welcomed him with such a big hug and said come Mera bacha ,
you were Perfect there what we all call earth .
You were more than perfect in your values that I too idealise you .
Source called out with so much love "Mahatma Satya Nand Munjal
today I say you are my most favourite. "
Maa Gayatri opens her hands and says come mere Bache ,
you were my favourite out there , full of Bhakti and Humbleness .
I'm so proud of all your deeds . Your life was full of deeds and deeds that no one could do .
Swami Dayanand SARASWATI welcomes pita ji with garlands and shower flowers on him .
And proudly Thanks pita ji for spreading His teachings and blesses him with Moaksh .
Here where , we are sad in our grandfather's demise, but up there He is so happy back home with His Parmatma .
There Pita Ji meets his Ardhangani my Dadi Ji
and his daughter Susham Bua n daughter in law my mom Harsh who welcome him with so much happiness .
That's not it , as he sees his beloved brothers and
his Bhabhi ! his happiness can't be described in words.
I can feel them all together up there and looking upon us and sending blessings for us .
Now that they are Divine , they are so powerful, they all are omnipresent.
Aligned with their Higher consciousness they all want to say to their Hero Parivaar
Humare Bachon ! We are always with you all , just a thought away . We love you all so much .
We all are sending unconditional love for all of you , protecting you , sending you all guidance whenever you need
Pita Ji with His beloved brothers have always set examples in their life be it their success in work ,
be it their love and respect for each other and now they have shown it again with leaving earth together
As pita ji's grand child we all have a responsibility to be even a little like him , we ask Divine to guide us.
Divine's home they call a non - judgemental place where they say nothing is good and nothing is bad
it's all your choices so to pita ji's children He loves you all the way you are
and will be right beside you ,helping you ,guiding you .
Today I'm sure this question is within all of us --- that How can we keep you alive in us
I'm sure pita Ji wants to tell us
By being So beautiful as the beauty is our pita Ji
By being so warm as the love is our pita Ji
By being so religious as divine is our pita Ji
By being so pure as Saint is our pita Ji

जिस पल तुम दिल से मुस्कुराओगे, अपनी हँसी में मेरी झलक पाओगे
न समझना कि साथ छोड़ दूंगा मैं
पलट कर देखोगे तो हर राह पर मुझे पाओगें।

श्रद्धांजलि

सत्य के आनन्द हो गये अमर

ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों को फैलाने पर कसी कमर।
है आर्यजगत को गर्व दिया वक्तत्व तर्क का जीत समर।

वे कर्मनिष्ठ उद्योगपति, वे धर्मनिष्ठ वैदिक रहस्य,
वो समस्थ विश्व को समझाकर सत्यानन्द हो गये अमर।।

सुन पायेंगे कहाँ वह प्रेरणा कि वाणी।
आँखों में घूम रही हँसती खिलती वह सूरत पहिचानी।

भाषण से अधिक देशभक्ति, हिन्दी ममता संस्कृति चाह,
उद्योग जगत् के कुशल खिलाड़ी, कहते सब वर्गो के प्राणी।।

यदि आर्य संस्कृति राष्ट्र हितों पर किया किसी ने कटुक वमन।
तो सहन न कर पाया किंचित भारत सपूत यह आर्य रतन।

हे आर्य श्रेष्ठ! हे धर्मवीर! ऐ प्रेरणास्त्रोत भीगी आँखों,
रूँधे कण्ठों से जनमानस करता तुमको शत बार नमन।।

-स्नेह लता, हाण्डा, इन्दौर

तुम कहाँ गये? कहाँ गये?

प्रिय, पूज्य, परिमल, पुनीत, परहित-रत,
प्रण पालक, परम गम्भीर! तुम कहाँ गये, कहाँ गये?
यशस्वी, यथार्थवादी, याज्ञिक, कर्म-योगी तुम,
यम-नियम पालक, अभय धीर! तुम कहाँ गये, कहाँ गये?

दीवाने दयानन्द के, वक्ता महान् विमल
वरिष्ठ नेता, हृदय विजेता, तुम कहाँ गये, कहाँ गये?
रजत-रूप, रंजित-मन, राष्ट्र के गौरव तुम,
टंकारा किया पलवित! तुम कहाँ गये, कहाँ गये?

प्रबल-प्रकाश पुंज, प्रतिभा की प्रतिमा तुम,
पाखण्ड हेतु प्रलयंकर समीर! तुम कहाँ गये, कहाँ गये?
काल-विकराल-क्रूर, आया, कुछ कहा न सुना,
कहाँ ले गया तुम्हारा पकड़ चीर, तुम कहाँ गये, कहाँ गये?

शत-शत, कोटि-कोटि, शोक-संतप्त-टंकारा,
शोकातुर हैं, शंकित हैं, बोल तुम किधर गये, कहाँ गये?
वीरान कर चल बसे, विशाल आर्य उपवन को,
सत्य से आनन्दित तुम, व्याकुल कर कहाँ गये, कहाँ गये?

-आचार्य राम देव जी (टंकारा)

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
www.tankara.com पर उपलब्ध है

नमन तुम्हें शतबार

ऋषि के सच्चे सैनिक तुम थे, आर्य प्रवर है सत्यानन्द जी।
गहरी निष्ठा से ऋषिवर के, कार्यो को गति तुमने दी थी।
प्रतिफल की आशा भी तुमने, जीवन में किंचित न की थी।

ओजस्वी वाणी से तुमने, ऋषिवर का संदेश सुनाया।
सिद्धान्तों के हित में तुमने, प्राणों का उत्सर्ग किया।
वाणी के कौशल से तुमने, वर्गो को अपवर्ग दिया।

कैसे बढ़े प्रगति के पथ पर, दयानन्द का आर्य समाज?
प्रतिफल इन्हीं विचारों से ही, गढ़ते रहे सुस्वस्थ समाज।
उच्च विचारों से आप्लावित, था उत्कट व्यक्तित्व तुम्हारा।

वैदिक पथ अनुगमन वृत्ति से, प्रायोजित कर्त्तत्व तुम्हारा।
गौरव आर्य जनों के तुम थे, था आर्यत्व समाहित तुममें।
ओजस्वी, तेजस्वी थे तुम। साहस तुममें भरा अपार।
हे सच्चे अनुयायी ऋषि के! मेरा नमन तुम्हें शत बार।।

-आचार्य वाचोनिधि आर्य, गान्धीधाम, गुजरात

महात्मा सत्यानन्द जी को श्रद्धांजलि

आज एक महान आत्मा को मोक्ष द्वार है मिल गया,
पर हुआ यह क्या? कि सारा टंकारा हिल गया।
हिल गई सब दरों दीवारें थरथराई बागडोर,
महात्मा सत्यानन्द जी जैसा दिखे न सारी दुनियां में और।
वह तो था सच्चा दयानन्दी सब कुछ समर्पित कर गया।
जीवन जीया बड़ी शान से उसी शान से वह चला गया।
किन्तु ऐसे कर्मयोगी मर कर भी मरते नहीं,
ऐसे फूल लगा आते हैं जो कभी झड़ते नहीं।
खुशबूये उनकी है फैली पंजाब और गुजरात में,
वह सदा जिन्दा रहेंगे हर एक के मन प्राण में।
महात्मा सत्यानन्द जी को मेरा है शत-शत नमन
उनकी दिखाई राह को पूर्ण करके करेगें नमन।

-राज लूथरा

महात्मा जी की प्रिय पंक्तियां

आ के तुझ बिन कितना घबराता हूँ मैं।
जैसे हर शेय में किसी शेय की कमी पाता हूँ मैं।।

भुलाता लाख हूँ लेकिन बराबर याद आते है।
मेरे भगवन बता वो क्यों कर याद आते हैं।।
नहीं आती तो याद उनकी महीनों तक नहीं आती।
मगर जब याद आती है तो अक्सर याद आते हैं।।

घेर लेने को मुझे जब भी समस्याऐं आ गई।
ढाल बन कर सामने माता-पिता की दुआएं आ गई।।

(महात्मा सत्यानन्द जी द्वारा लिखी उर्दू की पंक्तियों का हिन्दी रूपान्तरण।)

ऐसे थे महात्मा सत्यानन्द मुंजाल

महात्मा सत्यानन्द जी मुंजाल एक ऐसे श्रेष्ठ, त्यागी, दानी, पुरुषार्थी एवं पुण्यात्मा है जिनके शालीन, विनम्र, सरल और आर्य समाज के प्रति श्रद्धा से भरे व्यक्तित्व ने सभी को प्रभावित किया था। आज के भौतिवादी युग में भी महात्मा सत्यानन्द जी का जीवन आर्य समाज के दस नियमों को क्रियात्मक रूप देने में, ओ३म् की पताका को ऊँचा उठाने व उनके संदेशो को विश्व में फैलाने के लिए प्रयासरत था। अपनी जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण दूसरों को स्वाध्याय के लिए प्रेरित करते थे।

महात्मा जी का जन्म दिनांक 24.05.1917 को कमालिया (पाकिस्तान) में एक धार्मिक परिवार में हुआ। पिता स्वर्गीय बहादुर चंद जी मुंजाल की धर्म-परायणता एवं सुसंस्कारी माता ठाकुर देवी जी व गुरुकुल की शिक्षा ने आप पर आर्य समाज की विचारधारा का ऐसा रंग

चढ़ा दिया कि 98 वर्ष की आयु तक भी आप हजारों को इस रंग में रंग रहे थे। आर्य समाज के प्रति श्रद्धा एवं समर्पण भावना को देखते हुए 20 वर्ष की आयु में 1937 में आर्य समाज कोएटा बलोचिस्तान) ने इन्हें सम्मानित किया। देश विभाजन के पश्चात् अमृतसर से लुधियाना और फिर शीघ्र दिल्ली चले गए। वहां 14 वर्ष तक अपने ही घर को आर्य समाज का केन्द्र बनाए रखा, घर-घर पारिवारिक सत्संग किए व प्रतिवर्ष वार्षिक उत्सव भी आयोजित करवाए। वहां आप आर्य समाज (पुल बंगश) के पहले उपमन्त्री फिर 11 वर्ष तक मन्त्री रहे। 1962 में लुधियाना आकर आर्य समाज मॉडल टाऊन में पहले मन्त्री और प्रधान के रूप में सेवा कर रहे थे।

आपका सारा परिवार आर्य समाज के प्रति समर्पित है। आपके सभी भाई, पुत्र व पौत्र परिवार सहित आर्य समाज की गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं। इनके सभी परिवारों में प्रतिदिन संध्या व

हवन होता है और सभी सदस्य स्वाध्यायशील है।

आप एक ऐसे कर्मयोगी है जिनकी कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं। यज्ञ एवं सत्यार्थ प्रकाश को अपने जीवन का आदर्श मान कर लोगों को हजारों सत्यार्थ-प्रकाश वितरित किए व यज्ञ के लिए अपने पास से हवन कुण्ड भी देते थे। महात्मा जी के संस्कारो, ज्ञान, सत्यचरित्र व कर्त्तव्यनिष्ठा ने आर्य समाजों के निर्माण में मजबूत सीमेन्ट का काम किया। लुधियाना क्षेत्र में अब तक आप 25 समाजों की स्थापना कर चुके थे, आपने साहनेवाल, दोराहा, पायल, खन्ना व गोबिन्दगढ़ आदि आर्य समाजों को पुनर्जीवित करके प्रशंसनीय कार्य किया।

इतना ही नहीं पंजाब से बाहर उत्तरांचल के कई पिछड़े इलाकों में लोगों के भीतर जागृति लाने के लिए पीड़ी, नई टीहरी, लैटसटाऊन, दोगड़ा, कण्व आश्रम, पंचपुरी, सतपुली और कोटद्वार में आर्य समाजों की स्थापना की व विभिन्न सम्मेलन करवाए एवं पशुबलि जैसे अन्ध विश्वासों से ग्रस्त लोगों को सत्य मार्ग पर लाने के प्रयत्न किए, वहाँ सिलाई स्कूल व दवाखाने खुलवाकर अब तक भी धनादि से उनकी सेवा कर रहे थे।

स्वामी दयानन्द जी के जन्मस्थान टंकारा के न्यास को लेकर देने का श्रेय भी आपको ही जाता है। टंकारा जन्मभूमि से आपका विशेष लगाव था और जबतक स्वस्थ रहे और यात्रा करने में सक्षम रहे, प्रतिवर्ष ऋषिबोधोत्सव पर अवश्य उपस्थित होते रहे। आज उनके आशीर्वाद एवम् नेतृत्व में वहां 200 से अधिक ब्रह्मचारी नि:शुल्क शास्त्री तक की

शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इसी के साथ एक कम्प्यूटर सैन्टर, निर्धन युवतियों के लिए सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र, टंकारा एवम् निकतवर्ती गांव में नि:शुल्क एंबुलैंस सेवा, ब्रह्मचारियों द्वारा वेद प्रचार का कार्य निरन्तर चल रहा है। आपके परिवार द्वारा पुष्पावति मुंजाल सत्संग हॉल का निर्माण भी टंकारा परिसर में करवाया गया। आपने अपने सभी भाईयों

को एवम् परिवार के अन्य युवा सदस्यों को ऋषि जन्मभूमि टंकारा से जोड़ा। आज उनके निधन के उपरांत पूरा टंकारा परिसर एवम् टंकारा परिवार अपने आपको असहाय अनुभव कर रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में आपकी सेवाएं अविस्मरणीय हैं। आपके संरक्षण में अनेक विद्यालय एवं एक बी.एड महाविद्यालय चल रहे हैं, जिनका पंजाब राज्य में विशेष स्थान हैं। राष्ट्र की सरकार के उपरान्त सबसे बड़ा शिक्षण संस्थान डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली के आप उपप्रधान रहे। इस शिक्षण संस्थान को 700 से अधिक शिक्षण संस्थानों की नेतृत्व करने वाली संस्था होने का गौरव प्राप्त है।

आपकी सबसे बड़ी देन थी कि वर्ष 1999 में आर्य समाज मॉडल टाऊन की ओर से पंजाब राज्य में प्रथम आर्य कन्या गुरुकुल की स्थापना की गई जिसके आप कुलपति थे। यह गुरुकुल भौतिकता एवं आध्यामिकता का समन्वय है। आज इस कन्या गुरुकुल को पंजाब की सर्वश्रेष्ठ कन्याओं की शिक्षण संस्था होने का गौरव प्राप्त है। यहां की ब्रह्मचारिणियां पंजाब राज्य में प्रथम स्थान प्राप्त कर इस संस्था का गौरव बड़ा चुकी है। ना जाने ऐसी असंख्य संस्थाएं है जिनको आपको आशीर्वाद प्राप्त था।

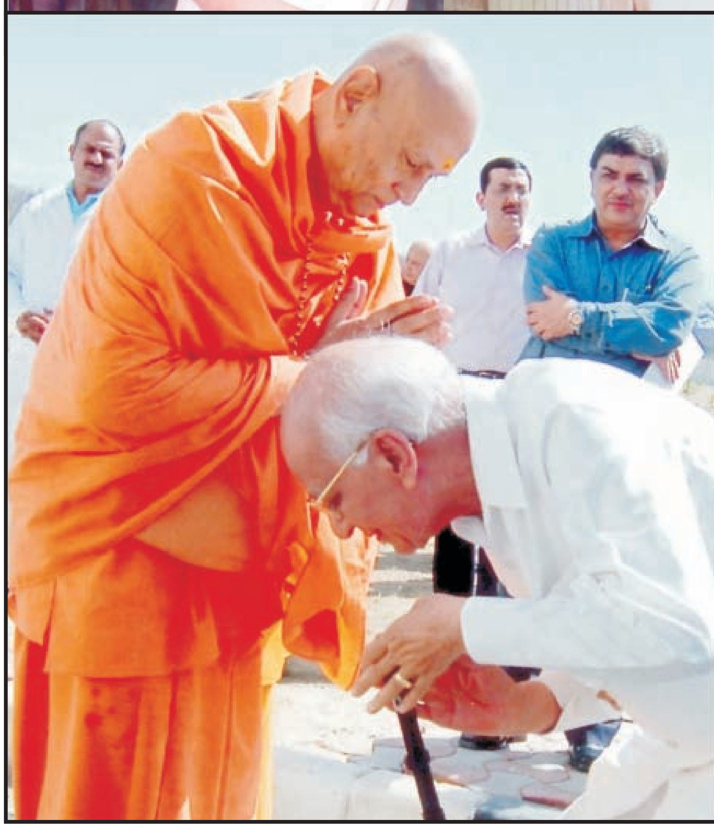

इन सब कार्यो में आपकी स्व. धर्मपत्नी आदरणीय माता पुष्पावती जी का पूरा-पूरा सहयोग था। प्रारम्भ से आज तक माता जी आर्य समाज के हर कार्य में बड़ी श्रद्धा व लगन के साथ आपकी सहभागी रही थी।

महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा व वैदिक धर्म में पूर्ण समर्पण को देखते हुए अखिल भारतीय सन्यासी मण्डल ने वर्ष 2000 के समागम (दीनानगर मठ) में आपको महात्मा की उपाधि से अलंकृत किया। आप इस आयु में भी भारतवर्ष में भिन्न-भिन्न आर्य संस्थानों के प्रधान, उप-प्रधान व ट्रस्टी के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे थे।

आप एक प्रसिद्ध उद्योगपति थे। आपने अपने भाईयों स्व. दयानन्द मुंजाल तथा स्व. डा. बृजमोहन जी मुंजाल एवं स्व. श्री ओम प्रकाश जी मुंजाल के सहयोग से साईकिल और मोटर साइकिल के औद्योगिक क्षेत्र में विश्व स्तर तक प्रसिद्धि प्राप्त की और गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में नाम दर्ज करवाया। अधिक आयु व अस्वस्थ होते हुए भी आर्य समाज की उसी लगन और श्रद्धा से सेवा और आर्य जनों को जागृत कर रहे थे। हम सबके लिए आपके ये शब्द आज भी स्मरणीय हैं कि **''आर्य समाज हम सबकी माता है और हम सबका कर्त्तव्य है कि कम से कम सप्ताह में एक बार रविवार को अपनी माता से मिलने आर्य समाज में अवश्य आया करें। इसका सम्मान और विस्तार करना हम सबका परम धर्म है।''**

अजय टंकारावाला

लुधियाना श्रद्धांजलि सभा चित्रों में

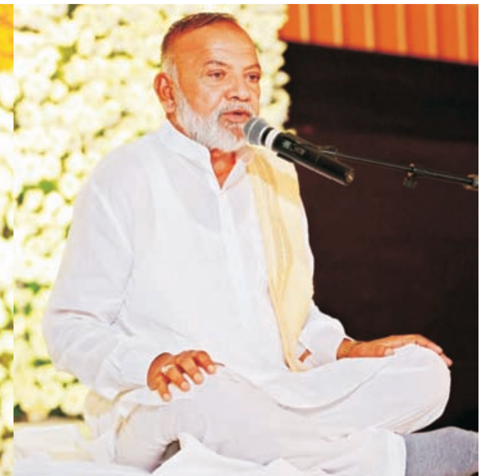

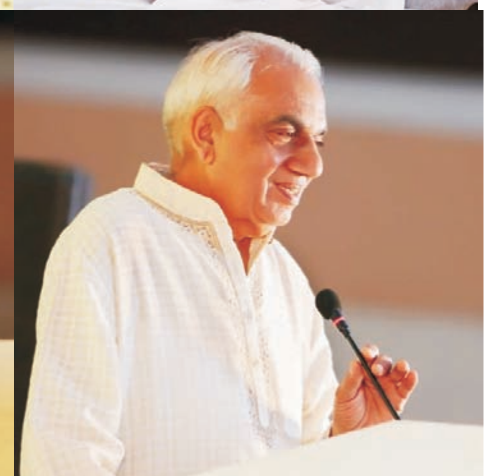

जब तक आप अपने अतीत को याद करते रहेंगे, भविष्य की योजना नहीं बना पायेंगे।
बीता हुआ कल अच्छा या बुरा जो हो, आपको अपने आने वाले कल को बेहतर बनाना है,
और वो तब बनेगा जब आप अपने आज पर ध्यान देंगे। - महात्मा सत्यानन्द जी

ज्ञानयोगी की तरह सोचें, कर्मयोगी की तरह पुरुषार्थ करें, और भक्तियोगी की तरह सहृदयता उभारें।
- महात्मा सत्यानन्द जी

दिल्ली श्रद्धांजलि सभा चित्रों में

महात्मा श्री सत्यानन्द जी मुंजालः एक परिचय– एक प्रेरणा

24 मई, 1917 को ग्राम कमालिया जिला लायलपुर (वर्तमान पाकिस्तान) में श्री बहादुर चन्द मुंजाल जी के यहां जन्में श्री सत्यानन्द मुंजाल जी की प्राथमिक शिक्षा माता–पिता की इच्छानुसार कमालिया ग्राम के गुरुकुल में हुई।

माता पिता से प्राप्त वैदिक सिद्धान्त एवं आर्यसमाजी विचारधारा को गुरुकुलीय शिक्षा ने और अधिक संवारा और मजबूती प्रदान की। मैट्रिक एवं हाई स्कूल उत्तीर्ण करने के पश्चात् आपने क्वेटा डिफेंस वर्कशॉप में कार्य आरम्भ किया और समय–समय पर क्वेटा आर्यसमाज एवं गुरुकुल पहुंचकर ज्ञान प्राप्त करते रहे। आपका विवाह श्रीमती पुष्पावती जी के साथ हुआ, जिन्होंने सहधर्मिनी के कर्त्तव्यों को पूर्णता से निभाया और उनका पूर्ण सहयोग किया। यज्ञ स्वाध्याय और आर्यसमाज के कार्यों में उनका अन्तिम समय तक सहयोग बना रहा।

वर्ष 1944 में आपने अमृतसर में दुकान खोली, किन्तु कुछ समय बाद वापस पाकिस्तान लौट गए। भारत विभाजन के बाद आप 1947 में लुधियाना आए तथा फिर दिल्ली आ गए। दिल्ली में आपने साइकिल का काम शुरु किया और आर्यसमाज पुलबंगस की स्थापना की। दिल्ली में फैक्ट्री लगाई तथा बहादुरगढ़ में भी एक फैक्ट्री की स्थापना की। 1962 में आप वापस लुधियाना लौट गए और मॉडल टाउन को अपना कार्यक्षेत्र बनाया।

लुधियाना में आप आर्यमाज मॉडल टाउन के सदस्य और इसके मन्त्री एवं प्रधान भी रहे। आर्यसमाजी विचारधारा और सेवा कार्यों के चलते उन्होंने दिल्ली, पंजाब, उत्तर प्रदेश, हिमाचल आदि प्रदेशों की आर्यसमाजों का निरीक्षण किया। आपने टिहरी उत्तराखण्ड में बन्द बड़ी लगभग 30–40 आर्यसमाजों का पुनरुद्धार किया और उनकी गतिविधियों को पुनः आरम्भ कराया। आपने सार्वदेशिक सभा एवं आर्य प्रदेशिक प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान पद को सुशोभित किया तथा अनेक संस्थाओं को अपना आशीर्वाद प्राप्त था। आप टंकारा ट्रस्ट के प्रधान रहे। सत्यार्थ प्रकाश न्यास (उदयपुर), परोपकारिणी सभा (अजमेर), वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ (साबरकाठा), तपोवन आश्रम (देहरादून) के प्रमुख ट्रस्टी रहे।

आपने लुधियाना के आसपास के क्षेत्र में 20 के करीब नई आर्यसमाजों की स्थापना की। आप स्वयं आर्यसमाजों में यज्ञ से पूर्व दरियां तक बिछाते थे और हॉल की सफाई भी किया करते थे। आपके सात्विक जीवन की यह एक अहम मिसाल है। आपने कन्या गुरुकुल शास्त्री शास्त्री नगर के कुलपिता पद को सम्भाला। अब इस गुरुकुल का नाम महात्मा सत्यान्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल रखा गया है। आपके सेवा कार्यों तथा समाज सेवा के कारण अखिल भारतीय संन्यासी मंडल ने वर्ष 2000 में दयानन्द मठ में आयोजित कार्यक्रम में आपको 'महात्मा' नाम से अलंकृत किया और आप महात्मा के नाम से प्रसिद्ध हुए और आर्य जगत आपको महात्मा सत्यानन्द मुंजाल जी के नाम से पुकारता है। आपने न केवल महात्मा नाम पाया अपितु अपने कार्यों से इसे चरित्रार्थ भी किया।

मुझे स्वयं उन्होंने एक बार बाताया कि वो काफी समय से बन्द पड़ी आर्यसमाज को खुलवाने के लिए गए और उसे साफ भी स्वयं किया। उस समय उनकी आयु 90 से अधिक रही होगी। आप स्वयं विचार करें कि आर्यसमाज उनकी नस–नस में कूट–कूट कर भरा था। मुझे उनका पहला आशीवार्द 1991 के नवम्बर में उत्तरकाशी के भूकम्प के समय प्राप्त हुआ, जब वे पीड़ितों की सहायता के लिए वहां आए थे और आर्यसमाज के कैम्प में हमें कार्य करता देख अपना आशीर्वाद दिया था।

आपने अपने जीवन में महर्षि दयानन्द जी के शिक्षा मिशन को पूर्ण करने के लिए बहादुरचन्द मुंजाल आर्य स्कूल सहित सात आर्य विद्यालय एवं बी.एड. कॉलेज की स्थापना की, जो पूरे पंजाब में शिक्षा में एक अहम स्थान रखते हैं। इनके अतिरिक्त दयानन्द मैडिकल कॉलेज के अन्तर्गत हीरो हार्ट इंस्टीट्यूट भी उनके सेवा संस्थानों में विशेष स्थान रखता है।

आपने अपने जीवन में हजारों की संख्या में सत्यार्थ प्रकाश एवं वैदिक विनय का वितरण किया।

वे अपने पीछे 5 सुपुत्र सर्वश्री योगेश मुंजाल, सुरेश मुजाल, सुधीर मुंजाल, उमेश मुंजाल एवं श्री महेश मुंजाल तथा दो सुपुत्रियों श्रीमती सुशन चोपड़ा एवं श्रीमती नीलम थापर एवं पौत्र–पौत्रियों से भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं। यह उन्हीं के दिए सस्कारों का प्रतिफल है कि उनके परिवार प्रत्येक घर में दैनिक यज्ञ होता है तथा स्थाई यज्ञशाला बनी हुई है। परमपिता से प्रार्थना है कि उनकी यज्ञीय भावना परिवार में सदैव बनी रहे और वे सदैव आर्यसमाज के माध्यम से समाज सेवा के कार्यों में सेवारत रहें।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि परोपकार एवं सेवा का जो पौधा महात्मा सत्यानन्द जी ने लगाया है वह आप सब परिवार के सदस्यों के सहयोग एवं सदभाव से वटवृक्ष के रूप में फैले और विश्व में उनके नाम का यया सदा फैलाते रहें।

– विनय आर्य, मन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

टंकारा गौशाला में गौ–पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन–पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन–पोषण पर **7000/–**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शवराजवती आर्या (उप–प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

प्राप्त शोक प्रस्ताव

1. पूनम सूरी प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली
2. आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
3. महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
4. आर्ष कन्या गुरुकुल दधिया
5. आर्य समाज अनारकली, नई दिल्ली
6. दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय, हिसार
7. आर्य अनाथालाय, फिरोजपुर कैन्ट
8. आर्य युवक समाज, नई दिल्ली
9. एस.एन.आर. पब्लिक स्कूल, पंजाबी, बाग, दिल्ली
10. आर्य समाज टंकारा, गुजरात
11. आर्य समाज राजकोट, गुजरात
12. आर्य समाज भुज (कच्छ), गुजरात
13. आर्य समाज अन्धेरी पूर्व, मुम्बई
14. आर्य समाज मॉडल टाऊन, जालन्धर
15. अखिल भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, दिल्ली
16. आर्य समाज डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली
17. आर्य समाज कस्तुरबा नगर, नई दिल्ली
18. वैदिक भक्ति साधन आश्रम, आर्य नगर, रोहतक-124001
19. आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़, जिला-झज्जर, (हरियाणा)
20. आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा रोहतक
21. परोपकारिणी सभा अजमेर
22. अमर शहीद पं. लेखराम स्मारक मण्डल (रजि.), गुरदासपुर, पंजाब
23. लद्धा भाई पटेल ट्रस्टी टंकारा ट्रस्ट
24. आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई
25. श्री सनातन धर्म प्रचारिणी सभा, नारायणा विहार, नई दिल्ली
26. आर्य केन्द्रीय सभा, गुड़गांव
27. आर्य वीर नेत्र चिकित्सालय, गुड़गांव, हरियाणा
28. आर्य समाज भीम नगर, गुड़गांव, हरियाणा
29. आर्य बाल कल्याण केन्द्र, भीमनगर, गुड़गांव, हरियाणा
30. सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल, बी ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली
31. आर्य समाज कैलाश, ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली
32. सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, रामलीला मैदान, नई दिल्ली
33. आर्य केन्द्रीय सभा, हनुमान रोड, नई दिल्ली
34. दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, हुनमान रोड, नई दिल्ली
35. आर्य विद्या सभा, गुरुकुल काँगड़ी, हरिद्वार, उत्तरांचल
36. आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली
37. निरामया: चैरिटेबल ट्रस्ट
38. Rotary Club Ludhiana Midtown
39. Ved Kaur Arya Girls Sr. Sec. School, Qadian, Gurdaspur
40. Dayanand Anglo Vedic School, Kadiya Punjab
41. D.A.V. Senior Secondary School, Kadiya Punjab
42. Mr. V.P. Bajab, President Gurgaon Industrial Association
43. President Vedic Kanya UCHH Vidyalaya, Gurgaon
44. Mrs. Vidya Sridhar, Principal Raman Munjal Vidya Mandir
45. Mrs. Aparna Erry, Principal, DAV Sr. Secondary School, Gurgaon
46. Mr. Suresh Redhu, Chairman, CII Uttrakhand State Council CII Councellor and Consultant, Maharashtra
47. Mr. Rahul Choudhary, Vice Chairman, CII Delhi State council
48. RTN R.K. Saboo, Rotary International
49. Mr. Sugyama, President, Showa Corporation, Japan
50. Mr. K Nishioka, COO Showa Corporation, Japan
51. Mr. Iwao Toide, President, Metal One Corporation, Japan
52. Mr. Ritsuya Iwai, CEO, Nippon Steel & Sumitomo Metal Corpn, Japan
53. Mr. D.K. Jain, Chairman, Lumax Industries
54. Mr. Ramesh Suri, Chairman, Subros Ltd.
55. Mr. Sunil Aroro, M.D. Abilities India India Piston & Rings Ltd.
56. Mr. Rumjhum Chatterjee, Group MD and Head Human Capital, Feeback Infra Pvt. Ltd.
57. Md. Adesh Gupta, CEO, Liberty Shoes Ltd.
58. Mr. R.K. Jain, CEO, Enkay Parivar
59. Mr. Nikhil Sahni, Sr. President, Govt. Business & Strategic Govt. Advisory
60. Mr. Ajay Shriram, Chairman, DCM Shriram
61. Mr. Sunita Bhatia, Chairman, Metro Exporters
62. Mr. Nirmal K Minda, CEO, Minda Group
63. Mr. S. Thomas, M.D. Sadhu Group
64. Arya Pratinidhi Sabha USA
65. Mr. Amar Aery Arya Samaj Markham Ontorio Canada.

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षों से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

शिवराजवती आर्या
उप-प्रधाना

रामनाथ सहगल
(मन्त्री)

आर्य कन्या गुरुकुल लुधियाना हुआ महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल

आर्य समाज के अन्तर्गत चल रहे आर्य कन्या गुरुकुल शास्त्री नगर को महात्मा सत्यानन्द मुंजाल को समर्पित करते हुए उसका नाम महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल रख दिया गया है। वर्ष 1999 में महात्मा सत्यानन्द मुंजाल द्वारा आर्थिक रूप से पिछड़ी हुई कन्याओं को शिक्षित करने के उद्देश्य से शुरु किए गए आर्य कन्या गुरुकुल में वर्तमान समय के दौरान 200 से अधिक कन्याएं आध्यात्मिक, वैदिक के अलावा 12वीं कक्षा तक की सामान्य शिक्षा ग्रहण करती है। पंजाब स्कूल एजुकेशन बोर्ड के साथ रजिस्टर्ड महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल ब्रह्मचारिणियों को निःशुल्क शिक्षा देने के साथ-साथ किसी भी सामान्य डे-बोर्डि की अपेक्षा उच्चस्तरीय स्कूल है जिसकी छात्राएं न केवल 10वीं व 12वीं कक्षा के अन्य स्कूलों के छात्रों की तरह मैरिट लिस्ट में आते हुए अपने संस्थान का नाम रोशन करती हैं बल्कि खेलकूद, जिम्नास्टिक, एथलीट व योगा में भी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना नाम कमा चुकी हैं। इस संबंध में संस्थान के नए कुलपति प्रिंसीपल मंगल राम मेहता ने बताया कि महात्मा सत्यानन्द मुंजाल द्वारा उठाए गए इस प्रयास को हमेशा उनके आदर्शो एवं मार्गदर्शन के नेतृत्व में चलाया जाएगा। उन्होंने बताया कि इस संस्थान की एक ब्रह्मचारिणी को उसकी कुशलता के मद्देनजर हाल ही में भारत सरकार द्वारा आगामी शिक्षा के लिए जापान भेजा गया है। उन्होंने बताया कि महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल भविष्य में महात्मा जी के अधूरे छोड़े कार्यो को पूर्ण करने के लिए हमेशा प्रयासरत रहेगा। इस संबंध में अप्पू इंटरनैशनल के एम.डी.पदम औल ने बताया कि 26 अप्रैल को आर्य समाज कमेटी द्वारा गुरुकुल के बाहर औपचारिक रूप में महात्मा सत्यानन्द मुंजाल कन्या गुरुकुल का बोर्ड स्थापित कर दिया गया है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती उपदेशक महाविद्यालय (टंकारा)

प्रवेश प्रारम्भ

अपने बच्चों को विद्वान, चरित्रवान तथा संस्कारी बनाने के लिए ऋषि दयानन्द जी की जन्मभूमि टंकारा के गुरुकुल में प्रवेश करवावें। योग्यता-शरीर तथा मन से स्वस्थ होना चाहिए।

शैक्षणिक योग्यता- कक्षा 7, 8 अथवा 10वीं पास। केवल लड़कों के लिए गुरुकुल है। प्रवेश की संख्या सिमीत है। अपना आवेदन 15 जुन 2016 से पहले भेजने का कष्ट करें। गुरुकुल महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक हरियाणा से सम्बन्ध है। विशेष जानकारी के लिए पत्र लिखें अथवा गुरुकुल के आचार्य जी से फोन पर सम्पर्क करें-

अध्यापकों की आवश्यकता

प्राच्य व्याकरण पद्धति से, गुरुकुल झज्जर (हरियाणा) के पाठ्यक्रमानुसार पढ़ाने की क्षमता रखता हो ऐसे अध्यापक की आवश्यकता है। आचार्य, शास्त्री आदि की डिग्री हो या न हो तो भी आवेदन कर सकते हैं। वेतनमान योग्यतानुसारा। आवास-भोजनादि की व्यवस्था गुरुकुल में निःशुल्क होगी। गुरुकुल के आचार्य जी को अपनी योग्यतादि के विवरण समेत आवेदन भेजे।

आचार्य रामदेव जी

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा,

डाक-टंकारा, जिला-मोरबी (गुजरात), पिन-363650, मो. 09913251448

महात्मा जी की प्रिय पंक्तियां

किसी मस्जिद या मन्दिर में, जा कर सर को झुका देना।
इबादत है, किसी बेआसरे को आसरा देना।

किसी नादान की मुश्किल में, काम आना इबादत है।
इबादत है यह जीवन, कौम की खातिर लगा देना॥

इबादत है किसी मजबूर का कर्जा चुका देना।
किसी मजलूम को जालिम से छुड़ा देना इबादत है॥

इबादत है वतन के वास्ते, सर को कटा देना।
इबादत है किसी भूखे को भोजन खिला देना॥

इबादत है किसी नंगे को भी कपड़ा पहना देना।
किसी नाशाद का दिल, शाद कर देना इबादत है॥

जिस तरह अग्नि का शोला, हर रंग में मौजूद है।
इस तरह परमात्मा हर शख्स में मौजूद है॥

गौ–दान : महा–दान

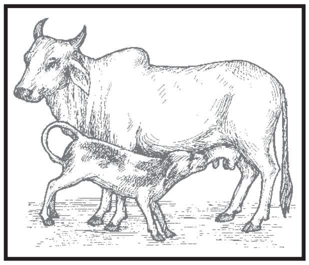

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन– प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से **20,000/–** रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप–प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत–प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/– रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

–: निवेदक :–

शिवराजवती आर्या (उप–प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

‘जीवन’ क्या है?

जब मनुष्य जन्म लेता है तो उसके पास सांसे तो होती हैं पर कोई नाम नहीं होता
और जब मनुष्य की मृत्यु होती है तो उसके पास नाम तो होता है पर सांसे नहीं होती।
इसी सांसे और नाम के बीच की यात्रा को ‘जीवन’ कहते हैं।
ना किसी के अभाव में जियो, ना किसी के प्रभाव में जियो।
यह जिंदगी है आपकी अपने स्वभाव में जियो।

टंकारा समाचार
के प्रसार में सहयोग दें

‘टंकारा समाचार’ उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से ‘टंकारा समाचार’ की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

‘टंकारा समाचार’ का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

-प्रबन्धक

प्रवेश प्रारम्भ

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस

❑ कक्षा शिशु से कक्षा नवम तक। ❑ विद्याविनोद प्रथमवर्ष (11) में तथा उत्तरमध्यमा प्रथमवर्ष (11) में। ❑ विद्यालंकार/वेदालंकार (समकक्ष बी.ए. ऑनर्स), शास्त्री (समकक्ष बी.ए.) प्रथमवर्ष में। ❑ आचार्य प्रथमवर्ष। ❑ विद्याविनोद (समकक्ष इण्टरमीडिएट) तक विज्ञान वर्ग की शिक्षण व्यवस्था। ❑ प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद की गायन, वादन में संगीत प्रभाकर तक शिक्षण व्यवस्था। ❑ कन्या गुरुकुल निजी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र (आई.टी.आई.) में कोपा (Computer Operator and Programming Assistant) एवं स्विंग टेक्नोलॉजी (Swing Technology) का एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम है कन्या गुरुकुल निजी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र एन.सी.वी.टी. द्वारा मान्यता प्राप्त है।

मो. 09258040119, 08006340583, 09927991922
E-mail:kanyagurukulmhv.hathras@gmail.com
आचार्य डॉ.श्रीमती पवित्रा विद्यालंकार

❑❑❑

<u>गुरुकुल खेड़ा खुर्द, दिल्ली-110082</u> में कक्षा 6 से कक्षा 12वीं तक के छात्रों का प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। प्रवेश के इच्छुक छात्र या अभिभावक सम्पर्क करें। आचार्य सुधांशु, मो. 8800443626

अध्यापकों की आवश्यकता

<u>गुरुकुल खेड़ा खुर्द, दिल्ली-110082</u> में अध्यापकों की आवश्यकता कक्षा 6 से 12वीं तक के लिए हिन्दी, अंग्रेजी, विज्ञान (कक्षा 6 से 10वीं तक) के अध्यापक की आवश्यकता है। आचार्य सुधांशु, मो. 8800443626

टंकारा ऋषि बोधोत्सव 2016 के चित्रों को देखने और डाऊनलोड करने के लिए इंटरनेट के माध्यम से www.facebook.com/ajaytankarawala पर जायें और लाइक व शेयर अवश्य करें।

टंकारा समाचार
पाठकों से विनम्र निवेदन

आपका प्रिय टंकारा समाचार निरन्तर 17 वर्षो से प्रति माह प्रकाशित हो रहा है। हमारा यह प्रयास रहा है कि वेद प्रचार, वैदिक मान्यताओं, महर्षि दयानन्द सरस्वती का दर्शन आप तक सरलतम भाषा में पहुँचे। आप द्वारा दिये गये सहयोग से इसकी ख्याति दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। आप इसके मान्य आजीवन सदस्य है।

आप सभी आजीवन सदस्यों से अनुरोध है कि 200/- रूपये की राशि टंकारा समाचार के नाम चैक द्वारा या टंकारा समाचार के **खाता नम्बर 0130010101110898, बैंक पी.एन.बी. मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC Code-PUNB0466500** में सीधे जमा करके अथवा NEFT करवा कर टंकारा समाचार कार्यालय, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर सूचित करें अथवा मोबाइल नम्बर 09560688950 पर एस.एम.एस. या कॉल कर (अपना आजीवन सदस्यता नम्बर नाम पते सहित भेजें।) ताकि टंकारा समाचार आपको प्राप्त होता रहे। **<u>(क्योंकि आजीवन सदस्य की राशि बढ़ा दी गई है।)</u>**

-प्रबन्धक

पितृ-यज्ञ

❒ स्व. पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय

'पितृ-यज्ञ' दो शब्दों से मिलकर बना है। एक ''पितृ'' और दूसरा ''यज्ञ''।

''पितृ'' का अर्थ है बाप। माँ और बाप दोनों को भी 'पितृ' कहते हैं। जैसे 'माता च पिता च पितरौ'। 'माता' और 'पिता' दोनों शब्दों का जब द्वन्द्व समास बनाते हैं तो 'पितरौ' बनता है। अर्थात् 'पितृ' अर्थ है माँ और बाप दोनों।

'पितृ' का प्रथमा विभक्ति में 'पिता' हो जाता है। कुछ संस्कृत न पढ़े हुए लोग समझते हैं कि 'पिता' जीते हुए बाप को कहते हैं और 'पितर' मरे हुए बाप को। परन्तु यह बात नहीं है। असली शब्द 'पितृ' है। जब उसका कर्त्ता-कारक बनाते हैं तो 'पिता' हो जाता है। जब कर्म्म-कारक बनाते हैं तो 'पितरम्' हो जाता है। कर्त्ता-कारक बहुवचन में 'पितर:' होता है। जैसे 'मम पिता गच्छति' का अर्थ है 'मेरा बाप जाता है'। 'पितरमपश्यम्' का अर्थ है 'मैंने बाप को देखा'। 'तेषां पितर आयन्ति' का अर्थ है 'उनके बाप आते हैं।

इस प्रकार 'पितृ' या 'पितर'। शब्दों में मौत का कुछ संकेत नहीं है। और यह कहना गलत है कि 'पितृ' या 'पितर' मरे हुए बाप के लिए आता है जीते हुए के लिए नहीं। दादे, परदादे या दादी और परदादी के लिए भी 'पितृ' शब्द आता है।

'यज्ञ' शब्द का अर्थ है पूजा, सत्कार। कुछ लोग समझते हैं कि 'यज्ञ' शब्द और 'हवन' शब्द का एक अर्थ है। यह भी गलत है। हवन को भी यज्ञ कहते हैं परन्तु यज्ञ अन्य अर्थो में आता है। 'यज' धातु जिससे 'यज्ञ' शब्द बना है, देवपूजा, संगतिकरण और दान इन तीन अर्थो में आती है। इसलिए 'यज्ञ' का अर्थ केवल हवन नहीं है। उदाहरण के लिए 'ब्रह्मयज्ञ' का अर्थ है स्वाध्याय या ईश्वर का ध्यान।

अतिथि यज्ञ का अर्थ है 'मेहमान की खातिरदारी करना'। यहाँ न तो होम या हवन से कुछ सम्बन्ध है, न आहुति देने से, न किसी पशु आदि के काटने से। देखिए मनुस्मृति अध्याय 3, श्लोक 70-

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञ: पितृयज्ञश्च तर्पणम्।
होमो दैवो बलिभौतो नृयतोऽतिथिपूजनम्॥

अर्थात् पढ़ने पढ़ाने का नाम ब्रह्मयज्ञ है। तर्पण को पितृयज्ञ कहते हैं। होम देवयज्ञ कहलाता है। पशुओं को भोजन देने का नाम भूतयज्ञ है और अतिथि के सत्कार को नृयज्ञ कहते हैं। हमने यहां यह श्लोक इसलिए दिया है कि केवल 'देवयज्ञ' में 'यज्ञ' शब्द का अर्थ 'होम' है। अन्यत्र यज्ञ का अर्थ पूजा और सत्कार ही है।

आश्वलायन गृह्यसूत्र में भी ऐसा ही है।

अर्थात् पञ्चयज्ञो देवयज्ञो भूतयज्ञ: पितृयज्ञो ब्रह्मयज्ञो मनुष्ययज्ञ **इति तद् यदग्नौ जुहोति स देवयज्ञो यद् बलिं करोति स भूतयज्ञो यत् पितृभ्यो ददाति स पितृयज्ञो यत् स्वाध्यायमधीते स ब्रह्मयज्ञो यन् मनुष्येभ्यो ददाति स मनुष्ययज्ञ इति तानोतान् यज्ञानहरह: कुर्वीत।**

(आश्वलायन गृह्यसूत्र, तृतीय अध्याय)

हम ऊपर कह आये हैं कि पितृ का अर्थ है माता, पिता या अन्य पुरखे। और यज्ञ का अर्थ है सत्कार। इसलिए 'पितृयज्ञ' का अर्थ हुआ माता-पिता आदि पुरखों की सेवा सुश्रूषा।

इसमें वेद का भी प्रमाण है-

अनुव्रत: पितु: पुत्रो मात्रा भवतु सम्मना:।

अर्थात् लड़के को चाहिए कि पिता के व्रतों का अनुसरण करने वाला और माता को प्रसन्न करने वाला हो। अर्थात् संतान को माता-पिता आदि गुरुजनों की सेवा करनी चाहिए।

अब एक प्रश्न उठता है कि पितृयज्ञ मरे हुए माता-पिता का होता है या जीते हुओं का। इसमें लोगों का मतभेद है। हम कुँआर महीनों में लोगों को अपने मरे हुए पितरों का श्राद्ध तर्पण करते हुए देखते हैं, कुँआर के कृष्णपक्ष को लोग 'पितृपक्ष' कहते हैं क्योंकि इसमें मरे हुए पुरखों का श्राद्ध तर्पण किया जाता है।

हम अभी कह चुके हैं कि 'पितृ' शब्द में कोई ऐसी बात नहीं जो मरे हुए माँ-बाप की ओर संकेत करे।

अब हम यहाँ यह देखना चाहते हैं कि क्या मरा हुआ भी किसी का बाप या माँ हो सकता है।

मनुष्य नाम है विशेष शरीरधारी जीव का। न तो केवल शरीर को ही मनुष्य कहते हैं। न केवल जीव को। जब शरीर में से जीव निकल जाता है तो उसे मनुष्य नहीं कहते किन्तु 'मनुष्य की लाश' कहते हैं। वह जीव भी मनुष्य नहीं है क्योंकि वह जीव मनुष्य के अतिरिक्त अन्य शरीर भी धारण कर सकता है। जो आज आदमी के शरीर में है वह कल मर कर चींटी के शरीर को धारण कर सकता है और परसों कुत्ता बिल्ली इत्यादि का। सम्भव है कि फिर किसी जन्म में वह मनुष्य का शरीर धारण करे।

इसी प्रकार न तो शरीर को ही माँ या बाप कहते हैं न जीव को। जब तक हमारे माता-पिता, पिता, दादी, दादा जीवित हैं तब तक वह हमारे माता, पिता, दादी या दादा हैं। जब मर गए तो उनकी लाश रह जायेगी जिसको जला देंगे। न्यायदर्शन में कहा है कि-

''शरीरदाहे पातकाभावात्।'' (न्यायदर्शन, अध्याय 3)

अर्थात् लाश के जलाने से पाप नहीं होता। जब हमारे माता-पिता आदि मर जाते हैं और हम उनकी लाश को जला आते हैं तो कोई हमसे यह नहीं कहता कि तुमने पितृ-हत्या की, तुम पापी हो। क्योंकि जिस चीज को हमने जलाया वह माँ-बाप न थे किन्तु माँ-बाप की लाशें थी।

अब प्रश्न होता है कि मरने के बाद हमारे माँ-बाप कहाँ हैं? क्या वह जीव माँ बाप हैं? कदापि नहीं। उन जीवों की पितृ संज्ञा नहीं। क्योंकि मरने के पश्चात् न जाने उन्होंने कहाँ जन्म लिया। वही जीव सम्भव है कि हमारे ही घरों में नाती पोतों या पुत्र के रूप में जन्म लें। या अपने कर्मानुसार ऊँच या नीच योनियों को प्राप्त हों या यदि परम योगी हों तो उनकी मुक्ति भी हो जाए। यदि हमारे माता या पिता हमारे पुत्र या पुत्री के रूप में जन्म लेंगे तो हम उनके 'पितृ' होंगे न कि वह हमारें। वस्तुत: माता-पिता आदि सम्बन्ध उसी समय तक हैं जब तक कि शरीर और जीव संयुक्त हैं? मृत्यु होते ही यह सम्बन्ध छूट जाते हैं।

जब माता-पिता मर जाते हैं तो हम कहते हैं कि हमारे माता-पिता मर गए। परन्तु वह मरते नहीं। जीव तो सदा अमर है। इसीलिए मरे हुए माता-पिता की पितृ संज्ञा केवल भूतकाल की अपेक्षा से होती है वर्तमान काल की अपेक्षा से नहीं। क्योंकि वह सम्बन्ध केवल भूतकाल में था अब नहीं।

इसीलिए यह कहते हैं कि हमारे पिता धनाढय थे, या निर्धन

थे, विद्वान थे या अविद्वान थें परन्तु यह कोई नहीं कहता कि आज हमारे माता-पिता कुत्ता या घोड़ा हैं या हाथी हैं। क्योंकि हमारा पितृत्व का सम्बन्ध उसी दिन समाप्त हो गया जिस दिन वे मर गए। इसीलिए पितृयज्ञ केवल जीवित माता-पिता का हो सकता है न कि मरे हुओं का। इसी को चाहे श्राद्ध कह लीजिए चाहे तर्पण। साधारणतया श्राद्ध का मरे हुओं के साथ जो सम्बन्ध है वह गलत है और वह एक प्रकार का कुप्रथा है। कुँआर को पितृपक्ष कहना गलत है। अगर हमारे माँ-बाप या दादी दादा जीवित हैं तो हमारे लिए सौभाग्यवश समस्त वर्ष ही पितृपक्ष है क्योंकि हमको नित्यय उनकी सेवा, सत्कार करना चाहिए। परन्तु यदि वह मर गए हैं तो कुँआर में ही कहाँ से आयेंगे। इसलिए श्राद्ध तर्पण जीते हुओं का होना चाहिए।

यह बात मनुस्मृति के नीचे के श्लोकों से प्रकट होती है-

देवतातिथिभृत्यानां पितृणामात्मनश्च यः।
न निर्वपति पञ्चानामुच्छ्वसन्न स जीवति॥

(मनु 03/72)

इसपर मन्वर्थ मुक्तावली में कुल्लूक भट्ट की टीका इस प्रकार है-

देवतेति। देवता शब्देन भूतानामपि ग्रहणम्। तेशामपि बलिहरणे देवतारूपत्वात्। भृत्य-वृद्धामाता-पित्रादयोऽवश्यं संवर्धनीयाः। सर्वत एवात्मानं गोपायेत्' इति श्रुत्या आत्मपोषणमप्यवश्यं कर्त्तव्यम्। देवतादीनां पञ्चानां योऽत्रं न ददाति स उच्छवसन्नपि न जीवति।

यहाँ 'पितृ' का अर्थ 'वृद्ध माता पित्रादयो' अर्थात् 'बूढ़े माँ बाप' स्पष्ट दिया है।

यह श्लोक भी उसी प्रसंग का है जिसमें पाँच यज्ञों का वर्णन है। इसलिए हमारी यह धारणा ठीक है कि पितृ यज्ञ बूढ़े माता-पिता का होता है न कि मरों का। इसमें कुल्लूक भट्ट ने 'अन्न देने' का भी वर्णन किया है। अर्थात् देवता, अतिथि, भृत्य, पितृ और आत्मा को अन्न देना चाहिए। इनमें जब मरे हुए अतिथि, मरे हुए भृत्य, मरे हुए आत्मा का वर्णन नहीं तो 'पितरो' को ही मरा हुआ क्यों माना जाये। जिस प्रकार अतिथि यज्ञ जीवित अतिथियों का है इसी प्रकार पितृ यज्ञ भी जीवित पितरों का होना चाहिए।

ऋषयः पितरो देवा भूतान्यतिथयस्तथा।
आशामहे कुटुम्बिभरतेभ्यः कार्यं विज्ञानता॥ (मनु. 3.60)

इस पर कुल्लूक भट्ट की टीका है-

एते गृहस्थेभ्यः सकाशात्प्रार्थयन्ते। अर्थात् ऋषि, पितर, देव भूत और अतिथि लोग गृहस्थियों से ही अन्न आदि की आशा रखते हैं। इसमें भी स्पष्ट है कि ऋषि, देव, पितर और अतिथि सब जीवित ही हैं। मरे हुए नहीं। अगले श्लोक से तो कोई सन्देह ही नहीं रहता-

कुर्यादहरहः श्राद्धमन्नेनोदकेन वा।
पयोमूलफलैर्वापि पितृभ्यः प्रीतिमावहन्॥

(मनु. 3.62)

अर्थात् (अहरहः) प्रति दिन श्राद्ध करें। किस प्रकार? अन्न, जल, दूध, मूल, फल से। किसका श्राद्ध करें? (पितृभ्यः) पितरों का। किस प्रकार? (प्रीतिमावहन्) अर्थात् प्रेम से बुलाकर।

यहाँ तीन बातें कही हैं (1) हर दिन श्राद्ध करें। (2) अन्न, जल, दूध, फल आदि से। (3) प्रीति पूर्वक बुलाकर। यह तीनों बातें जीते हुओं में घट सकती हैं। मृतकों में नहीं। इसमें न तो कुँआर के लिए कहा है न गया के पिण्डदान का, न कौओं को खिलाने का। जीते पिता-माता के लिए जो बूढ़े हो गए हैं रोज श्राद्ध करने का विधान है।

फिर यदि मरे हुए पितरों का तात्पर्य होता तो उनको प्रीति-पूर्वक कैसे बुला सकते? क्या वे अपनी-अपनी योनि को छोड़कर आ सकते थे? कदापि नहीं। हम तो कभी नहीं देखते कि कोई जीव कुँआर के कृष्ण पक्ष में अपने शरीर को छोड़कर श्राद्ध लेने के लिए जाता हो या जा सकता हो। मरे हुओं का श्राद्ध करना असम्भव और असम्बद्ध कार्य करने की कोशिश करने के समान है।

यहाँ एक प्रश्न उठता है कि संस्कृत शास्त्र में मृतक श्राद्ध का वर्णन नहीं है। हम मानते हैं। स्वयं मनुस्मृति मृतक श्राद्ध का बहुत से श्लोकों में वर्णन है। उनके लिए कहीं माँस के पिण्डों का वर्णन है कहीं अन्य अण्ड-बण्ड बातों का। जैसे-

द्वाद्ध मासौ म त्स्यमांसेन त्रीन्मासान् हारिणेन तु।
औरन्भ्रेणाथ चतुरः शाकुनेनाथ पञ्च वै॥
षण्मासांच्छागमांसेन पार्षतेन च सप्त वै।
अष्टावेणस्य मांसेन रौरवेण नवैव तु॥
दशमासांस्तु तृप्यन्ति बराहमहिषामिषैः।
शश कूर्मयोस्तु मांसेन मासानेकादशैव तु॥

अर्थात् मछली के माँस से दो मास के लिए, हिरण के माँस से तीन मास के लिए, भेड़ के माँ से चार मास के लिए, पक्षियों के माँस से पाँच मास के लिए, बकरी के माँस से 6 मास के लिए, चित्र मृग के माँस से सात मास के लिए, एण के माँस से आठ, हरू के माँस से नौ, सुअर और भैंसे के माँस से दस और खरगोश और कछुवे के माँस से 11 मास के लिए पितरों की तृप्ति होती है।

ऐसी अण्ड-बण्ड और हिंसा युक्त बातों को आज कोई पण्डित नहीं मानता। और न कहीं इस प्रकार के श्राद्ध किए जाते हैं। बात यह है कि मनुस्मृति में पीछे से स्वार्थी लोगों ने समय-समय पर अपने स्वार्थ की बातें मिलाकर उसको दूषित कर दिया है। इसी प्रकार अन्य शास्त्रों में भी बहुत मिलावट हुई है। बुद्धिमान लोगों को थोड़े से विचार करने से यही पता चल सकता है।

हम कह चुके हैं कि मृतक श्राद्ध न केवल अनुचित ही है किन्तु असम्भव भी है। हमारे पास कोई साधन नहीं है कि यदि हम घोर प्रयत्न करें तो भी उन जीवों को जो अपनी जीवित दशा में हमारे माता-पिता कहलाते थे कुछ खाना पानी पहुँचा सकें। मर कर प्राणी की दो ही दशा हो सकती है। या तो मुक्त हो गए। या जन्म मरण के फेर में हैं। यदि मुक्त हो गए हों मुक्त जीवों को खाना पानी या श्राद्ध तर्पण से क्या प्रयोजन? वह तो परम गति को पहुँच चुके। प्राकृतिक पदार्थो से उनका कुछ सम्बन्ध नहीं रहा। यदि वे जन्म ले रहे हैं और पशु पक्षी या मनुष्य की योनि में हैं तो उन तक हम उनके शरीरों द्वारा ही पहुंच सकते हैं। केवल नदी में जल दान करने या ब्राह्मणों को खिलाने, या कौओं को खिलाने से उनतक कुछ भी नहीं पहुँच सकता। अतः यह सब व्यर्थ भ्रममूलक है।

कुछ लोग कहते हैं कि हमारे कर्मो का उनको फल मिलता है। परन्तु यह तो महा अनर्थ है। वैदिक सिद्धान्त में जो करता है वही भोगता है। एक के कर्म का दूसरे को फल मिला करे तो बड़ा अन्याय हो जाय।

ईश्वर जन्म तो मरते समय ही देता है। फिर हमारे कर्मो का फल हमारे मरे हुए पितरों को कदापि नहीं पहुँच सकता।

कुछ लोग श्राद्ध इसलिए करते हैं कि इस बहाने से ब्राह्मणों को भोजन देने का पुण्य मिल जाता है। परन्तु वह ठीक बात का विचार नहीं करते। हम ब्राह्मणों को भोजन खिलाने के विरूद्ध नहीं है। न कौओं या मछलियों को भोजन खिलाने के। क्योंकि विद्वान ऋषि मुनि अथवा अतिथ ब्राह्मणों को खिलाना अतिथि यज्ञ है और कौओं, चीटियाँ, मछलियों को खिलाना भूत यज्ञ है। परन्तु हमारा विरोध इस अज्ञान और धोखे से है। तुम यदि अतिथि यज्ञ करते हो तो अतिथि यज्ञ के नाम से करो। करते हो भूत यज्ञ या अतिथि यज्ञ और नाम रखते हो पितृ यज्ञ का इससे खाने वाले और खिलाने वाले दोनों को भ्रम होता है। ब्राह्मणों को यह कह कर खिलाओ कि हम तुमको खिलाते हैं। कौओं कोयह कहकर खिलाओं कि हम पक्षियों को खाना देते हैं। पितरों का बहाना क्यों करते हों? जो काम झूठ और अज्ञान को मिला कर किया जाता है उससे पुण्य के स्थान में पाप होता है।

वस्तुत: पितृ यज्ञ यह है कि हम जीते हुए माता, पिता आदि की सेवा करें। क्योंकि वह बूढ़े हो गए हैं। अब वह धन कमाने के योग्य नहीं रहे। उन्होंने हमारे ऊपर उपकार किया है। जिसको पाल पोस कर बड़ा किया। उनको हमारे ऊपर ऋण है जिसको पितृ ऋण कहते हैं। पितृ ऋण के चुकाने का एक मात्र उपाय पितृ यज्ञ है। माता-पिता की सेवा करने से हम अपने ऋण से उऋण होंगे। वह हमको आशीर्वाद देंगे और हमारा कल्याण होगा।

सच पूछिए तो मृतक श्राद्ध पितृ यज्ञ बाधक है। साधक नहीं। हम नित्य प्रति आँख से देखते हैं कि बूढ़े माता-पिता को कोई पूछता तक नहीं। वह अनेक प्रकार के कष्ट उठाते हैं। मरने पर उनका बहुत धन लगा कर श्राद्ध किया जाता है।

जियत पिता से दंगमदंगा।
मरे पिता को पहुँचाए गंगा।।

बहुत से बूढ़े लोग भी भ्रम में पड़े हैं। वे जीते जी खाते नहीं। एक-एक कौड़ी जोड़कर अपने श्राद्ध के लिए छोड़ जाते हैं। इस प्रकार वह अपने कर्त्तव्य की हानि करते हैं। यदि उनको दान ही करना था तो अपने जीते जी दान कर जाते। परन्तु वह दान नहीं करना चाहते। मानों दान को भी स्वार्थ के साथ मिला कर दूषित कर रहे हैं।

जब तक लोग यह न समझेंगे कि पितृ यज्ञ का मृतकों से सम्बन्ध नहीं उस समय तक लोगों में सच्चे पितृ यज्ञ के लिए श्रद्धा न होगी। और माता-पिता की उपेक्षा ही होती रहेगी।

बहाने मत खोजो। जो करना है उसका उद्देश्य समझ कर और ज्ञान पूर्वक करो। तभी कल्याण है। गपोड़ों पर विश्वास मत करो।

दोस्त बनाने से पूर्व-नीयत और संगत परखें

❑ शैलजा द्विवेदी

वक्त के साथ-साथ युवाओं की सोच काफी बदल चुकी है। अब दोस्ती जैसे रिश्ते में उम्र या लिंगभेद जैसी बातें अमूमन आड़े नहीं आतीं। लेकिन किसी रिश्ते की असली सच्चाई क्या है उसे जानने से पहले ही समाज अपने मन में एक अवधारणा बना लेता है। एक लड़के और लड़की की दोस्ती के रिश्ते को यह समाज अकसर ऊपर से ही देखना पसंद करता है। रिश्तों का आधार ही विश्वास होता है। अत: रिश्तों को कायम रखने के लिए आपको अपने ऊपर विश्वास होना चाहिए और इसके साथ-साथ आपको अपने साथी पर भी विश्वास होना चाहिए। बात चाहे पुरुष मित्र की हो या महिला मित्र की दोस्ती के पहले कुछ बातों का ख्याल रखना जरूरी है, खासकर युवतियों को।

रिश्ते के लिए जरूरी

1. किसी भी लड़के से दोस्ती करने से पहले उसका बैकग्राउंड जानना बहुत जरूरी है। जानकारी के अभाव में किसी आपराधिक प्रवृत्ति के युवक से भी दोस्ती हो सकती है। इसलिए चौकन्ना रहना बहुत जरूरी है।
2. व्यक्ति का स्वभाव उसके आचरण का आइना होता है। शुरुआती बातचीत को गहरी दोस्ती में बदलने से पहले जान लें कि लड़के का स्वभाव कैसा है। वह आपके स्वभाव से मेल खाता है या नहीं।
3. किसी लड़के से दोस्ती करने से पहले उसकी आदतों को जान लें, क्योंकि वह बाद में आपके लिए मुसीबत बन सकती हैं। यह न सोचें कि आदतें समय के साथ बदल जाएंगी। संभव है कि उसकी बुरी लत आपकी भी अपना शिकार बना ले।
4. इंसान पर उसकी संगत का असर जरूर होता है, इसलिए जिस लड़के से आप दोस्ती करने जा रही हैं, उसके दोस्तों के बारे में पता करें। अगर किसी की संगति ही बुरी है, तो उससे दूर रहें।
5. कुछ लड़के बहुत ही आसानी से दोहरी जिंदगी मैनेज कर लेते हैं। इसलिए यह तय कर लें कि जो रूप आपके सामने है वही उसका असली चेहरा भी है। कहीं ऐसा न हो वह आपसे कोई मतलब साध रहा हो।
6. लड़के अपने इमोशंस नहीं दिखाते, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि उनमें इमोशंस होते ही नहीं हैं। इसलिए यह परख लें कि युवक भावानात्मक रूप से परिपक्व है या नहीं। वरना वह भविष्य में दोस्ती से आगे बढ़कर आपसे अनचाही डिमांड भी कर सकता है।

ताकि बनी रहे दोस्ती

❑ जो व्यक्ति आपके बारे में अफवाहें फैलाते हैं या मजे लेकर सुनते हैं, वे आपके दोस्त नहीं हो सकते। इसलिए आप भी दोस्तों के बारे में गॉसिप न करें। अगर अपने किसी फ्रेंड के बारे में आपने कुछ गलत सुना है, तो उससे पर्सनली इस बारे में बात करें।

❑ अक्सर युवा, दोस्तों के बीच खुद की पहचान को भुलाने लगते हैं। ग्रुप में पॉपुलर होने के लिए वे हर बात पर सहमति जाता देते हैं। ऐसा न करें, खुद के प्रति ईमानदारी बरतें।

❑ किसी समस्या में आने पर दोस्त का पक्ष लें। उसकी थोड़ी बहुत गलती हो, तब भी उसे सपोर्ट करें। क्योंकि दोस्ती में कंडीशंस नहीं होती। लेकिन उसकी गलती उसे अकेले में बताएं जरूर।

❑ अक्सर दोस्ती टूटने की वजह यह होती है कि एक फ्रेंड को महसूस होता है कि दूसरे ने जरूरत पड़ने पर मुंह मोड़ लिया। अगर आपके फ्रेंड ने मुश्किल घड़ियों में आपको सपोर्ट किया है, तो आप भी जरूरत पड़ने पर उसे हौसला बंधाने में पीछे न रहें। कोशिश करें कि आप हमेशा अपनी अच्छी बातों के लिए फ्रेंड्स की यादों में रहें।

– आभार दैनिक भास्कर नागपुर

कुछ ऐसे व्यतीत करें बुढ़ापा

❒ ओम प्रकाश अग्रवाल

1. बुढ़ापा जरूर आएगा। यह तो पक्का ही है।
2. बुढ़ापे के लिए हर इंसान को जवानी में सोचना चाहिए।
3. पश्चिमी सभ्यता का जोर है। कहीं बुढ़ापा दुखदाई न हो।
4. कुछ पैसा सरकारी माध्यम से जरूर रखना चाहिए।
5. बैंक, डॉक्टर, दवाई, खाना, लैटरिन पास-पास होने चाहिए।
6. कुछ लोग भरोसे वाले जरूर होने चाहिए। चाहे अपने हों या पराए।
7. बुढ़ापा अकेले नहीं कटता।
8. विल वगैरह समझौता करके कर देनी चाहिए। जैसे गुजराती करते हैं। बाद में झँझट नहीं होता।
9. बुढ़ापे में जायदाद का सहारा ही नहीं पैसे का भी सहारा होना चाहिए।
10. पचास वर्ष के बाद सांसारिक रिश्ते कम कर देने चाहिए। जहाँ जाना है, उसको समझना चाहिए।
11. बुढ़ापे में स्वाद से बचना चाहिए।
12. तीन बातों का ध्यान रखो। मौन-ज्यादा बोलना नहीं। कौन-कौन क्या कर रहा है? वास्ता कम रखो। नोन-नमक कम है ज्यादा है क्या कहना।
13. बुढ़ापे का व्यसन वाला जीवन भारी बन देता है।
14. बुढ़ापे में सामाजिक काम भी सहायक होते हैं।
15. चौधरी बनने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।
16. बच्चों को प्यार करो। आठे-आठे का मेल।
17. अच्छी क्वालिटी, अच्छी दुकानों का चयन कर लेना चाहिए।
18. सादगी पसन्द बुढ़ापा सरल होता है।
19. ऊँची आवाज में बोलना खतरे से खाली नहीं होता।
20. सही इच्छा को इसी जन्म में पूरा कर लेना चाहिए।
21. जवानी आकर चली जाती है। बुढ़ापा आकर जाता नहीं।
22. बुढ़ापे में किए हुए अच्छे-बुरे काम बहुत याद आते हैं।
23. बुढ़ापे की अकड़ दुःखदाई बना देती है।
24. बुढ़ापा मन का होता है, अगर इंसान एक्टिव रहे तो ठीक है।
25. प्रभु का धन्यवाद करो। प्रार्थना करो, हम प्रभु तेरी सन्तान हैं।

इसे भी विचारों

❒ आचार्य अनिलेश

1. कितना मुश्किल है जिन्दगी का सफल कि भगवान मरने भी नहीं देते और संसार के इन्सान जीने नहीं देते।
2. खून जिस मनुष्य का भी हो रंग सबका एक ही है, तब कैसे पता लगाया जाये कि कौन बेगाना है और कौन अपना है?
3. चलो माना कि दुनिया बहुत बुरी है, लेकिन तुम तो अच्छे बनो, तुम्हें किसने रोका है।
4. जो जैसा है उसे वैसा ही अपना लो। रिश्ते निभाने आसान हो जायेंगे।
5. प्रार्थना कभी खाली नहीं जाती, बस लोग उस प्रभु-कृपा का इन्तजार नहीं करते।
6. हे स्वार्थ! तेरा शुक्रिया। एक तू ही है जिसने लोगों को आपस में जोड़कर रखा है।
7. वक्त की मार तो देख, दुनियां जीतनेवाले सिकन्दर का देश दिवालिया हो गया।
8. गिरना भी अच्छा है, औकात का पता चलता है। बढ़ते हैं जब हाथ उठाने को, तब अपनों को पता चलता है।
9. बहुत देखा जीवन में समझदार बनकर, पर खुशी हमेशा पागल बनने पर ही मिलता है।
10. गलती जिन्दगी का एक पन्ना है, परन्तु रिश्ते पूरी किताब हैं। जरूरत पड़ने पर गलती का पन्ना फाड़ देना, लेकिन एक पन्ने के लिए पूरी किताब मत फाड़ देना।
11. जिन्दगी के सफर में बस इतना ही सबक सीख लो कि सहारा कोई-कोई ही देता है, धक्का देने को हर शख्स तैयार बैठा है।
12. इंसान को उस जगह हमेशा खामोश रहना चाहिए, जहां दो कौड़ी के लोग अपनी हैसियत के गुण गाते हों।
13. धर्म से कर्म इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि धर्म करके भगवान् से मांगना पड़ता है, जबकि कर्म करके भगवान् को खुद ही देना पड़ता है।
14. कोई भी इंसान इतना अमीर नहीं होता कि वो अपना भूतकाल खरीद सके। और कोई भी इन्सान इतना गरीब नहीं होता कि वो पुरुषार्थ से अपना भविष्य न बदल सके।
15. इन्सान को अपनी औकाल भूलने की बीमारी है और कुदरत के पास याद दिलाने की अचूक दवा है।
16. छोटे-छोटे कदम मीलों का सफर तय कर सकते हैं।
17. सब्र और सच्चाई एक ऐसी सवारी है, जो अपने सवार को जिन्दगी में ना तो कभी गिरने देती किसी के कदमों में और न किसी शख्स की नजरों में।
18. अच्छे के साथ अच्छे रहे, लेकिन बुरे के साथ बुरे नहीं बनो। क्योंकि पानी से खून साफ कर सकते हो, लेकिन खून से खून नहीं।

टंकारा ऋषि बोधोत्सव 2016 पर पधारें ऋषिभक्त

अपने चित्रों को देखने और डाऊनलोड करने के लिए इंटरनेट के माध्यम से www.facebook.com/ajaytankarawala पर जायें और लाइक व शेयर अवश्य करें।

टंकारा में कमरों के लिए

सहयोग राशि देकर नाम पट लगवाये।
अधिक जानकारी के लिए
सम्पर्क करें- अजय, मो.9810035658

स्वाभिमान

॥ ओ३म् ॥

स्वावलम्बन

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल

अपना

व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण

भव्य राष्ट्रीय शिविर-2016

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू के सहयोग से अतिभव्य रूप में आयोजित कर रहा है।

दिनांक 5 जून से 12 जून, 2016

स्थान : मोन्टेसरी नरगिस दत्त पब्लिक स्कूल, आर.एस.पुरा, जम्मू

''अहं केतुरहं मूर्धाऽहमुग्रा विचाचनी'' (ऋ. 10/159/5)

वैदिक नारी की इस गौरवमयी गर्जना को फलीभूत करने के लिए प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी कन्याओं में शारीरिक, आत्मिक नैतिक बल एवं वैदिक सिद्धान्तों व संस्कारों का प्रशिक्षण देकर उन्हें राष्ट्र, समाज व परिवार के निर्माण में एक अहम् भूमिका निभाने हेतु राष्ट्रीय आर्य वीरांगना प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जा रहा है।

इस शिविर के माध्यम से कन्याओं को शारीरिक एवं बौद्धिक विकास, राष्ट्रीय चेतना, अनुशासित जीवन, आत्मरक्षण, शस्त्र प्रशिक्षण, हस्तकला, संगीत एवं वैदिक संस्कृति के प्रति निष्ठा उत्पन्न करना ही हमारा मुख्य उद्देश्य है। सभी प्रान्तीय सभाओं व जिला समाजों से जहां-जहां भी वीरांगना दल की शाखाएं लगती है से प्रार्थना है कि वो अपनी चुनी हुई कम से कम दो वीरांगना जो कम से कम दो शिविर में शामिल हुई हों, को इस शिविर में भेज कर इसका लाभ उठाएं।

विशेष आकर्षण

1. शिविरार्थियों को एक दिन जम्मू भ्रमण कराया जायेगा।
2. शूटिंग व तीरन्दाजी सिखाई जायेगी व कराटे ब्लैक बैल्ट शिक्षक द्वारा सिखाया जाएगा।

उद्घाटन : रविवार 5 जून, 2016 प्रातः 10 बजे

समापन : रविवार 12 जून, 2016 प्रातः 10 से 1 बजे

★ वीरांगना की आयु कम से कम 14 वर्ष हो। ★ ऋतु के अनुसार अपना बिस्तर, भोजन के बर्तन, टार्च, लाठी, मग, साबुन साथ लायें। ★ शिविर का गणवेश 2 जोड़ी सफेद सलवार कमीज, केसरिया दुपट्टा, सफेद पी.टी. शूज, सफेट मोजे व पहनने के उचित कपड़े साथ लाएं। ★ शिविरार्थी कोई भी कीमती वस्तु व पैसा मोबाइल साथ न लाएं। ★ शिविर के बीच में अभिभावक मिलने न आएं, इससे व्यवस्था खराब होती है। ★ शिविर शुल्क 200/- रूपये प्रति शिविरार्थी होगा। ★ सभी शिविरार्थी अपना नामांकन 30 मई तक अवश्य करा लें, फोन द्वारा भी करा सकते हैं, ताकि व्यवस्था सुचारू रूप से हो सके। ★ सभी शिविरार्थी शनिवार 4 जून 2016 दोपहर 12 बजे तक शिविर स्थल पर अवश्य पहुँच जाएं। ★ अस्वस्थ कन्याएं एवं जो अपना कार्य स्वयं करने में असमर्थ हों, कृपया शिविर में भाग न लें।

निवेदनः सभी आर्य जनों से निवेदन है कि इस राष्ट्रीय शिविर में बहुत कन्याएं भाग लेंगी, अतः अपनी श्रद्धा एवं सामर्थ्य अनुसार नकद राशि, आटा, दाल, चावल, देसी घी, मसाले आदि देकर पुण्य का लाभ उठाएं।

-: संयोजक :-

साध्वी डॉ.उत्तमायति, प्रधान संचालिका, मो. 09672286863 (अजमेर)

मृदुला चौहान, संचालिका, मो. 09810702760, 24339700

आरती खुराना, सचिव, मो. 09910234595

विमला मल्लिक, कोषाध्यक्ष, मो. 09810274318

सुकृति चौधरी, प्रान्त संचालिका, जम्मू

-: निवेदक :-

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू

राकेश चौहान, प्रधान, मो. 9419206881

भारत भूषण, उपप्रधान, मो. 9419133884

रविकान्त, महामन्त्री, मो. 9419188830

योगेश गुप्ता, कोषाध्यक्ष, मो. 9419192144

अनिल चौधरी, मो. 9596815551

डॉ. अशोक गुप्ता, मन्त्री, मो. 9419194405

स्नेहा चौधरी, शिविराध्यक्ष

संस्कृति

शिक्षकः **सचिन, सत्यम, अभिलाषा, ऋतांशी, उर्मिला, पारूल, प्रियंका**

सेवा

उपरोक्त शिविर में 14 वर्ष से अधिक आयु की वो वीरांगनाएं जिन्होंने पहले भी कम-से-कम दो शिविरों में भाग लिया हो आ सकती है। दिनांक 15 मई 2016 तक अपने नाम उपरोक्त दिए गए मोबाइल नम्बरों पर सूचित करें ताकि व्यवस्था बनाई जा सके।

Sing Your
Death Song and
Die Like a Hero
Going Home

टंकारा समाचार मई 2016
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2015-16-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2015-16-17
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-05-2016
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथिः 23.04.2016

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 मोबाइलः 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय